vinetur

भारत की जंगली एगेव प्रीमियम स्पिरिट्स बूम को दे रही है गति

31% की बाजार वृद्धि दर आपूर्ति और मानकीकरण की चुनौतियों के बावजूद दक्कन पठार पर किसानों की आय बढ़ा रही है.

मंगलवार, 16 जून 2026



भारत के दक्कन पठार में उगने वाली जंगली एगेव प्रीमियम स्पिरिट्स के लिए एक नया कच्चा माल बनकर उभर रही है, क्योंकि डिस्टिलर टकीला-शैली के पेयों के लिए घरेलू बाजार बनाने की कोशिश कर रहे हैं और किसान उस पौधे से अधिक कमाने लगे हैं जिसे लंबे समय तक एक परेशानी माना जाता था।

शुक्रवार को प्रकाशित Moneycontrol की एक रिपोर्ट, जिसमें BBC का हवाला दिया गया, ने कहा कि भारत के शुष्क क्षेत्रों से मिलने वाली जंगली एगेव को एगेव-आधारित स्पिरिट्स की बढ़ती मांग के कारण अब तेजी से "ब्लू गोल्ड" के रूप में देखा जा रहा है। यह बदलाव दक्षिणी और मध्य भारत के कुछ हिस्सों में हो रहा है, जहां यह मजबूत पौधा शुष्क परिस्थितियों में उगता है और किसान अक्सर इसे कांटेदार खरपतवार मानकर खारिज कर देते थे।

यह बदलाव एक कृषि कहानी और एक पेय उद्योग कहानी, दोनों को दर्शाता है। उत्पादक एगेव को भारत में प्रीमियम स्पिरिट्स का एक नया खंड बनाने के तरीके के रूप में देख रहे हैं, ऐसे समय में जब टकीला और उससे जुड़ी श्रेणियों में वैश्विक रुचि मजबूत बनी हुई है। वहीं किसान यह पा रहे हैं कि जो पौधा कभी अनदेखा था, वह अब प्रीमियम भुगतान दिला सकता है।

Moneycontrol ने बताया कि भारत का एगेव स्पिरिट्स बाजार 31% की दर से बढ़ रहा है। इस गति ने इस संभावना पर ध्यान खींचा है कि भारत वैश्विक टकीला कारोबार में एक छोटी हिस्सेदारी हासिल कर सकता है, जिसका मूल्य रिपोर्ट ने $15 billion आंका। हालांकि, इस प्रयास पर स्पष्ट सीमाएं हैं क्योंकि भारतीय एगेव से बने उत्पादों को तब तक कानूनी रूप से टकीला नहीं बेचा जा सकता जब तक वे Mexico के denomination-of-origin नियमों को पूरा न करें।

इसका मतलब है कि भारतीय उत्पादक वास्तव में टकीला नहीं, बल्कि टकीला-शैली या एगेव-आधारित स्पिरिट्स की दिशा में काम कर रहे हैं। फिर भी, व्यावसायिक तर्क स्पष्ट है। एगेव वैश्विक स्पिरिट्स में सबसे अधिक देखी जाने वाली सामग्रियों में से एक बन गई है, क्योंकि कई बाजारों के उपभोक्ताओं ने provenance, craft production और विशिष्ट कच्चे माल से जुड़े उत्पादों के लिए अधिक भुगतान करने की इच्छा दिखाई है।

भारत में इसका आकर्षण कृषि में भी निहित है। एगेव शुष्क भूमि की परिस्थितियों में जीवित रह सकती है, जहां अन्य फसलें संघर्ष कर सकती हैं, इसलिए यह गर्मी और जल-संकट से प्रभावित क्षेत्रों में आकर्षक बनती है। दक्कन पठार के किसानों के लिए इसका मतलब यह हो सकता है कि सीमांत भूमि या कम उपयोग वाली जंगली वृद्धि को उच्च-मूल्य वाले पेयों से जुड़ी आय के स्रोत में बदला जाए।

लेकिन वही प्रचुरता जो जंगली एगेव को आकर्षक बनाती है, डिस्टिलरों के लिए समस्याएं भी पैदा कर रही है। Moneycontrol ने कहा कि बिना खेती किए गए या व्यापक रूप से फैले पौधों से मिलने वाली आपूर्ति मानकीकरण को जटिल बनाती है, जो स्पिरिट्स उत्पादन में बेहद महत्वपूर्ण मुद्दा है। यदि डिस्टिलर बड़े पैमाने पर स्थिर बैच तैयार करना और प्रीमियम श्रेणी में उपभोक्ता भरोसा बनाना चाहते हैं, तो उन्हें चीनी स्तर, परिपक्वता और स्वाद प्रोफ़ाइल में निरंतरता चाहिए।

कटाई का समय भी एक चुनौती है। एगेव वार्षिक फसल की तरह व्यवहार नहीं करती, और इसके उपयोग योग्य होने की अवधि संकरी हो सकती है। यदि उत्पादक अलग-अलग क्षेत्रों से अलग-अलग परिपक्वता चरणों पर जुटाए गए जंगली भंडार पर निर्भर करते हैं, तो उन्हें नियमित उत्पादन बनाए रखने में कठिनाई हो सकती है। इसका असर उत्पादन योजना से लेकर मूल्य निर्धारण और ब्रांड पोजिशनिंग तक हर चीज़ पर पड़ सकता है।

पेय कंपनियों के लिए ये सीमाएं भारत के घरेलू बाजार से आगे भी मायने रखती हैं। यदि वहां एगेव-आधारित स्पिरिट्स का उत्पादन बढ़ता है, तो यह धीरे-धीरे सोर्सिंग पैटर्न को बदल सकता है और पारंपरिक उत्पादन क्षेत्रों के बाहर आपूर्ति के लिए एक नया भूगोल खोल सकता है। साथ ही, कमजोर मानकीकरण या अनियमित कटाई चक्र डिस्टिलरों के लिए गुणवत्ता, लागत और अनुबंध शर्तों में अस्थिरता पैदा कर सकते हैं जो विस्तार करना चाहते हैं।

ये जोखिम खास तौर पर प्रीमियम स्पिरिट्स में महत्वपूर्ण हैं, जहां निरंतरता प्रतिष्ठा से गहराई से जुड़ी होती है। कोई श्रेणी उपभोक्ताओं और निवेशकों की शुरुआती उत्सुकता आकर्षित कर सकती है, लेकिन दोहराई जाने वाली बिक्री आमतौर पर भरोसेमंद स्वाद और आपूर्ति पर निर्भर करती है। यदि भारतीय उत्पादक खेती की पद्धतियों, प्रसंस्करण नियंत्रणों और स्पष्ट उत्पाद परिभाषाओं के जरिए इन मुद्दों को हल कर लेते हैं, तो वे एगेव स्पिरिट्स में एक टिकाऊ जगह बना सकते हैं।

यह विकास ऐसे समय भी आ रहा है जब कई पेय कंपनियां ऐसे विकास खंड तलाश रही हैं जो स्थानीय सोर्सिंग को प्रीमियम मूल्य निर्धारण के साथ जोड़ते हों। एगेव इस रणनीति में फिट बैठती है क्योंकि यह श्रेणी की मजबूत पहचान रखती है, जबकि Mexico की संरक्षित टकीला पदनाम के बाहर क्षेत्रीय व्याख्या की गुंजाइश भी छोड़ती है।

अब तक यह अवसर शुरुआती चरण में दिखाई देता है। उपलब्ध रिपोर्टिंग बढ़ती रुचि, तेज बाजार वृद्धि और कुछ किसानों के लिए बेहतर रिटर्न की ओर इशारा करती है, लेकिन साथ ही ऐसे संरचनात्मक अवरोधों की ओर भी जो विस्तार को धीमा कर सकते हैं। जंगली एगेव के इर्द-गिर्द उद्योग खड़ा करने के लिए केवल मांग पर्याप्त नहीं है। इसके लिए संगठित कटाई, अनुमानित कच्चे माल की गुणवत्ता और इतनी प्रसंस्करण क्षमता चाहिए कि बिखरी हुई पौध आपूर्ति को व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य स्पिरिट्स में बदला जा सके।

इन बाधाओं के बावजूद, यह बदलाव ग्रामीण भारत में इस पौधे को देखने के तरीके में एक उल्लेखनीय परिवर्तन दर्शाता है। जिसे पहले कम मूल्य वाली झाड़ीदार वृद्धि माना जाता था, उसे अब प्रीमियम शराब, कृषि विविधीकरण और निर्यात संभावनाओं पर चर्चाओं में शामिल किया जा रहा है। डिस्टिलरों के लिए यह दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती स्पिरिट्स शैलियों में से एक में स्थानीय कच्चे माल आधार के साथ प्रवेश करने का मौका देता है। किसानों के लिए यह ऐसी भूमि और वनस्पति से संभावित नई आय धारा देता है जो पहले बहुत कम प्रतिफल देती थी।

भारत इस संभावना को एक स्थिर एगेव स्पिरिट्स व्यवसाय में बदल पाता है या नहीं, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि उत्पादक जंगली पौधों के अवसरवादी उपयोग से नियंत्रित खेती और आपूर्ति प्रणालियों की ओर कितनी जल्दी बढ़ते हैं। तब तक यह क्षेत्र संभवत: मांग को लेकर उत्साह और इस सावधानी—दोनों—से परिभाषित रहेगा कि क्या सही समय और गुणवत्ता स्तर पर पर्याप्त सुसंगत एगेव डिस्टिलरियों तक पहुंच पाएगी या नहीं।